विचार बिन्दु

भूख प्यास से जितने लोगों की मृत्यु होती है उससे कहीं अधिक लोगों की मृत्यु ज्यादा खाने और ज्यादा पीने से होती है। –कहावत

केवल मॉडर्न मेडिसिन के भरोसे तो धनाड्य देश ही स्वस्थ नहीं रह पाये

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है कि आज दुनिया भर में योग या योगा से जुड़ी अर्थव्यवस्था का 56000 करोड़ रुपये का वैश्विक बाज़ार क्यों विकसित हुआ? क्या आपने कभी यह भी सोचा है कि यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका में योग से वर्ष 2012 में 2 करोड़ से अधिक अमेरिकी नागरिक क्यों जुड़े हुये थे? क्या कभी आपका माथा इस बात पर भी नहीं ठनका कि अमेरिका में ही वर्ष 2016 में 50 प्रतिशत की बढ़त के साथ 3 करोड़ 60 लाख अमेरिकी नागरिक योग से क्यों कर रहे थे। इस पर भी कभी ध्यान दिया आपने कि अमेरिका में योग अभ्यासकर्ताओं ने 2015 में योग करने के लिये कपड़ों, उपकरण, कक्षाओं और सामानों पर 16 अरब डॉलर से ज्यादा खर्च कर दिये? यही खर्च 2012 में सिर्फ 10 अरब डॉलर था और, क्या आपने यह इस बात का भी कोई अर्थ नहीं लगाया कि अमेरिका की कुल जनसंख्या का 34 प्रतिशत, अर्थात् 8 करोड़ अमेरिकी लोगों का यह कहना है कि अगले 12 महीने में वे योग से पहली बार जुड़ने की इच्छा रखते हैं? अगर उत्तर नहीं मिला हो तो आगे और भी कुछ आंकड़े देखिये, हो सकता है ज्ञान-चक्षु खुल जायें।

क्या कभी आपने इस बात का कोई अर्थ समझने का प्रयास किया है कि अमेरिका में योग और आयुर्वेद का 28 से 30 बिलियन डॉलर का बाज़ार क्यों खड़ा है। योग और आयुर्वेद जैसे विशुद्ध भारतीय विचार पर अमेरिकी अर्थव्यवस्था इतनी क्यों मेहरबान हो रही है? अगर इस धन का अंदाज़ा न लग रहा हो तो तुलना कर के समझ लीजिये तुलना कि वर्ष 2011 में भारत में एफडीआई की आवक केवल 36.5 बिलियन डॉलर ही थी। यह भी जान लीजिये कि विश्व में केवल 65 देश ही ऐसे हैं जिनका जी.डी.पी. 80 बिलियन डॉलर से ऊपर है।

अमेरिका जैसे विकसित, सर्व-शक्ति-संपन्न और दुनिया में मॉडर्न मेडिसिन के अगुआ देश के नागरिकों को योग और आयुर्वेद के पचड़े में पड़ने की क्या जरूरत आ गयी? असल में इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि केवल मॉडर्न मेडिसिन के भरोसे तो अमेरिका जैसे दिग्गज और विकसित देश ही स्वस्थ नहीं रह पाये, भारत कैसे रह लेगा। पर भारत के नागरिक अभी भी आयुर्वेद और योग की हैसियत को नहीं समझ पाये। जहां दुनिया योग, आयुर्वेद और उससे जुड़े परचून में छप्पन हजार करोड़ रुपये या 80 बिलियन डॉलर का भारी-भरकम बाज़ार खड़ा कर चुकी है, वहीं भारत के नागरिक अभी भी आयुर्वेद और योग जैसी विधाओं को अपने स्वास्थ्य बजट का केवल 3 प्रतिशत देकर संतुष्ट हैं। इसी प्रकार जहां आज दुनिया स्वास्थ्य के लिये वेलनेस टूरिज्म, जिसमें आयुर्वेद की चिकित्सा के लिये आने वाले पर्यटक भी सम्मिलित हैं, से जुड़ी अर्थव्यवस्था में 438.6 बिलियन डॉलर का वैश्विक बाजार खड़ा कर चुकी है, वहीं भारतीय समाज आज भी मॉडर्न मेडिसिन में अपने स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत फूंकते हुये तमाम रोगों की वैश्विक राजधानी बनकर संतुष्ट है।

थॉमस एडीसन (1847-1931) ने कहा था कि 'भविष्य के डॉक्टर कोई दवाई नहीं देंगे, बल्कि अपने रोगी को शरीर के ढांचे के बढ़िया रखरखाव के लिये समुचित आहार, रोग के कारण और उनकी रोकथाम में रुचि विकसित करेंगे।' अठारवीं-उन्नीसवीं सदी में बड़ी बात कही थॉमस एडीसन ने, है न? कोई बात हमें तभी महत्वपूर्ण और बड़ी लगती है जब कोई विदेशी नागरिक कहता है। थॉमस एडीसन जैसा दिग्गज कहे तो और भी मीठी लगती है। लेकिन हम नौवीं शताब्दी ईशा-पूर्व में दिये गये आयुर्वेद के उस महान सिद्धांत को भूल गये जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षा की प्राथमिकता का सिद्धांत कहा जाता है। हम, भारत के दिग्गज महर्षि-वैज्ञानिकों आत्रेय-पुनर्वसु, धन्वन्तरि अग्निवेश, चरक, सुश्रुत, और काश्यप आदि आदि द्वारा निर्मित आहार, विहार, स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, रसायन, पंचकर्म और औषधि की सात दीवारों के सिद्धांत को भी भूल गये। तभी तो भारतीय समाज आज गैर-संचारी रोगों की वैश्विक राजधानी बनने की दिशा में आगे आगे दौड़ रहा है।

अगर केवल मॉडर्न मेडिसिन के भरोसे दुनिया का स्वास्थ्य सुधरता तो यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, या ऐसे ही अन्य धनी देशों में कोई बीमार नहीं बल्कि सभी नागरिक स्वस्थ होना चाहिये। लेकिन आंकड़े इसके विपरीत बोलते हैं। वर्ष 2007 में प्रकाशित एक रिपोर्ट-एन अनहेल्दी अमेरिका-के अनुसार क्रोनिक बीमारियों के कारण अमेरिकी अर्थव्यवस्था को लगने वाली सालाना चपत 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक थी, और यह आंकड़ा सदी के मध्य तक 6 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने की आशंका है। केवल त्वचा रोग ही देखें तो वर्ष 2013 के आंकड़े बताते हैं कि लगभग 85 मिलियन अमरीकी लोगों को कम से कम 1 त्वचा रोग के कारण चिकित्सक को दिखाना पड़ा। इसकी प्रत्यक्ष लागत 75 बिलियन डॉलर थी और अप्रत्यक्ष रूप से 11 बिलियन डॉलर तो अतिरिक्त खर्चा भी हुआ। अगर मोटापा व उससे होने वाली बीमारियों की बात करें तो यूनाइटेडस्टेट्स ऑफ़ अमेरिका व ब्रिटेन में ही मोटापा-जनित रोगों के उपचार में लागत के अनुमान बताते हैं वर्ष 2030 तक अमेरिका में 48 से 66 मिलियन डॉलर सालाना और ब्रिटेन में 1.9 से 2 बिलियन पाउंड सालाना वृद्धि होगी।

चर्चा का सार यही है कि व्यक्ति, परिवार, गाँव, जिला, राज्य व देश के स्वास्थ्य बजट में आयुर्वेद को कम से कम 50 प्रतिशत का आवंटन हो तो आयुष मिशन के अंतर्गत उच्चकोटि की योजनाओं का क्रियान्वयन भारत के स्वास्थ्य के लिये कल्याणकारी होगा।

मणिपाल यूनिवर्सिटी के डॉ. सागरिका कामथ व डॉ. राजेश कामथ ने हाल ही में प्रकाशित एक पेपर में रोचक प्रश्न का विश्लेषण किया है: क्या भारत में स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं है? उनका कहना है कि वर्ष 2017-18 के लिये स्वास्थ्य मंत्रालय का बजट आवंटन तकरीबन 7.5 बिलियन डॉलर के बराबर है। वहीं कॉर्पोरेट सब्सिडी 91 बिलियन डॉलर या स्वास्थ्य बजट का 12 गुना से अधिक है। इन आंकड़ों में प्रत्येक परिवार व नागरिक द्वारा अपने जेब से किया खर्चा शामिल नहीं है। देश के 3 करोड़ से अधिक हृदय रोगियों का हाल तो पहले भी बताया जा चुका है। भारत में कुल होने वाली मृत्यु की संख्या में से 60 प्रतिशत केवल गैर-संचारी रोगों के कारण है। देश के अस्पतालों में चिकित्सार्थ भर्ती होने वाले कुल मरीजों में 40 प्रतिशत गैर-संचारी रोगों के होते हैं। स्वाभाविक है कि भारतीय परिवारों, समाज और सरकार को इन बीमारियों की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को वर्ष 2030 के पूर्व गैर-संचारी रोगों के कारण 4.58 लाख करोड़ डॉलर की हानि हो सकती है।

इस बजट में से भी आयुर्वेद की उपेक्षा कर स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत एलोपैथी को जाने के बावजूद स्वास्थ्य संबंधी सतत विकास लक्ष्य में भारत 188 देशों में 143वें स्थान पर है। यह आयुर्वेद की उपेक्षा का दुष्परिणाम है। भारत को 2030 तक शीर्ष 25 देशों में लाने की केवल यही एक रणनीति है कि आयुर्वेद की प्रिवेंटिव और थेराप्युटिक विधाओं में गंभीर निवेश किया जाये। वर्ना तो देश के 7.5 बिलियन डॉलर के कुल स्वास्थ्य बजट से ज्यादा तो भोजन करने के पहले हाथ न धोने के कारण होने वाली डायरिया से ही सालाना 23.25 अरब डॉलर की हानि भारत को हो रही है। यह हानि भारतीय अर्थव्यवस्था के कुल जीडीपी का 1.2 प्रतिशत है। हाथ धोने में लगने वाले कुल खर्च को समायोजित करने के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था को सालाना 5.64 अरब डॉलर की बचत हो सकती है। यह हाथ धोने में संभावित लागत का 92 गुना है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार आयुर्वेद के रसायनों के माध्यम से स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा करने पर भारत में कम से कम 200 बिलियन डॉलर सालाना का दवाई-खर्च बच सकता है। अनुमान यह भी है कि भारत में अस्पतालों के 40 बिस्तर खाली हो जायेंगे यदि हम रसायन चिकित्सा व यथा-संभव आयुर्वेदोक्त जीवन शैली अपना लें। प्रमाण-आधारित बात यह है कि देश के अस्पतालों में चिकित्सार्थ भर्ती होने वाले कुल मरीजों में 40 प्रतिशत गैर-संचारी रोगों के होते हैं। यदि आयुर्वेद को देश, राज्यों और परिवारों के कुल बजट का 50 प्रतिशत आयुर्वेद को देकर देश में रसायन चिकित्सा और आयुर्वेदोक्त जीवन शैली को प्रोत्साहित किया जाये तो गैर-संचारी रोगों से ग्रसित होने की दर गिरना सुनिश्चित है।

इस तमाम चर्चा का सार यही है कि व्यक्ति, परिवार, गाँव, जिला, राज्य व देश के स्वास्थ्य बजट में आयुर्वेद को कम से कम 50 प्रतिशत का आवंटन हो तो आयुष मिशन के अंतर्गत उच्चकोटि की योजनाओं का क्रियान्वयन भारत के स्वास्थ्य के लिये कल्याणकारी होगा। जब तक देश के प्रत्येक जिले और तहसील में पर्याप्त बजट, आवश्यक चिकित्सकीय संसाधन और उपकरण, भरपूर औषधियाँ, पर्याप्त आधारभूत ढांचा, और मानव-संसाधन नहीं मिलते, तब तक भारतीय समाज का स्वास्थ्य नहीं सुधर पायेगा। लेकिन इसी के बराबर महत्वपूर्ण यह बात भी है कि हम सब एक नागरिक की हैसियत से स्वस्थ रहते हुये स्वास्थ्य की रक्षा करने या अपनी बीमारी का इलाज कराने के लिये पहले आयुर्वेदाचार्यों के पास जायें। हमें मॉडर्न मेडिसिन का उपयोग तभी करना श्रेयस्कर है जब गंभीर शल्य चिकित्सा आदि की आवश्यकता हो। उच्चकोटि के कर्मठ आयुर्वेदाचार्यों की मदद से आयुर्वेद के आहार, विहार, स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, रसायन, पंचकर्म और औषधि की सात दीवारों के सिद्धांत को सम्हालिये। स्वस्थ रहेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कंटीले फूल

- **केजरीवाल सरकार गिराने की साजिश रच रहे थे विश्वास।**

इसे कहते हैं–जले पर नमक छिड़कना।

- **लालू के लोगों ने मुझे फोन किया: जज**

शायद वो भूल गए कि जज, जज होता है। वह दुनियादारी के पचड़ों से दूर रहता है।

- **बैंक के बाहर काला बाजार, 1300 में 'बिक' रही 10 के नोटों की गड्डियां।**

बचपन में हमने टॉफीज के टिकटों की कालाबाजारी सुनी थी। इस सरकार में नोटों की कालाबाजारी। इसे कहते हैं अच्छे दिन।

- **'आशीर्वाद' पास, डिग्रियां फेल।**

चाहे डिग्रियां फेल हुई लेकिन वीआईपी की असलियत सामने आ गई।

- **पात्र किसानों को ही मिलेगा कर्ज माफी का लाभ, केरल मॉडल पर सियासत गर्म।**

औद्योगिक घरानों की कर्ज माफी के समय पात्रता कहां चली जाती है? क्या तबाही पात्रता देखकर होती हैं?

पचपदरा में पुलिस नमक खानों को बर्बाद करने पर आमादा

- उत्पादक मुआवजा या विशेष पैकेज के लाभ से वंचित
- खारवाल समाज ने बैठक कर निंदा प्रस्ताव पारित किया
- पीएम की सभा वाले दिन समाज लगाएगा घरों पर काले झंडे

बालोतरा, (निसं)। पचपदरा क्षेत्र में साल्ट के रिफाइनरी क्षेत्र में राज्य व केंद्रित भाजपा सरकार द्वारा लवण उद्योग को पहुंचाए जा रहे नुकसान को लेकर लवण उत्पादक खारवाल समाज में भारी रोष नजर आ रहा है।

नमक उत्पादकों ने बताया कि 60॰वर्ष पुराने इस परंपरागत नमक उद्योग से जुड़े परिवार अपनी आंखों के सामने प्रशासन द्वारा पाटी जा रही खानों को बचाने में खुद को असहाय महसूस कर रहे हैं।

पुलिस और प्रशासनिक अमला दल-बल के साथ नमक की खानों को बर्बाद कर लाठी में कानूनी कारवाई का डर दिखाकर पुरखों की विरासत और थाली को तहस-नहस कर खारवालो के हितों को कुचलने पर आमादा है। करीब 200 खानों की बर्बादी के बावजूद सरकार की ओर से नुकसान प्रभावित नमक उत्पादकों को मुआवजा विशेष पैकेज या पूनर्णवास जैसे लोकतांत्रिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है, जो सरासर गलत एवं तानाशाही है। जिला प्रशासन एवं उपखंड प्रशासन के माध्यम से बार -बार सरकार तक लिखित बात व पीड़ा पहुंचाने के बावजूद सरकार कोई सुनवाई नहीं कर रही है और ना ही कोई सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शिलान्यास कार्यक्रम में शरीक होने के प्रस्तावित दौरे को देखते हुए पिछले कुछ दिनों से प्रशासन ने कुछ नरमी दिखाते हुए यह झांसा दिया है कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे 4 जनवरी 2018 को यहां तैयारियों का जायजा लेने के लिए आ रही है। इस दौरान खारवाल समाज से वार्ता करवा कर संतुष्ट कर दिया जाएगा तथा नुकसान प्रभावितों को उचित रुप से संतुष्ट भी कर दिया जाएगा। जिला कलेक्टर बाड़मेर, उपखंड अधिकारी बालोतरा, पचपदरा तहसीलदार ने खारवाल समाज तथा प्रतिनिधिमंडल को गुमराह कर इस तरह से माहौल बनाया कि सांभरा आशापुरा माता मंदिर में आगमन के समय मुख्यमंत्री खारवालों से बात भी करेंगी और उचित घोषणा भी उनकी भलाई के लिए करेंगी। लेकिन, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वहां मुख्यमंत्री ने लवण उद्योग को हो रहे नुकसान को लेकर न तो कोई जिक्र किया और ना ही खारवाल समाज के हितार्थ कोई घोषणा की।

मुख्यमंत्री के इस रुख से समाज में भारी रोष है। साथ ही समाज ने जिला कलैक्टर, उपखंड अधिकारी, तहसीलदार तथा पुलिस के अधिकारियों की झांसेबाजी को लेकर कडे शब्दों में निंदा की है। इसको लेकर पचपदरा के जागनाथ महादेव मठ में खारवाल समाज द्वारा गुरुद्वारा में बैठक आयोजित कर खारवाल समाज तथा समाज के विभिन्न संगठनों की बैठक में निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के दौरान समाज को अपनी बात रखने का मौका नहीं देने पर आक्रोश प्रकट करते हुए खारवाल समाज ने प्रधानमंत्री की सभा का पूरी तरह से बहिष्कार कर सभा वाले दिन खारवाल समाज अपने घरों पर काले झंडे लगा कर विरोध करने का निर्णय लिया। पचपदरा में खारवाल समाज ने दुर्भावना के खिलाफ नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया। सरकार नमक उत्पादक खारवाल समाज के हितों की सुरक्षा को सुनिश्चित कर समाज की ओर से प्रस्तुत मांग पत्र पर अमल नहीं करती है तो व्यापक स्तर पर जन आंदोलन किया जाएगा।

फिर हुई बाज व गिद्ध की मौत

रामदेवरा, (निसं)। निकटवर्ती खेतोलाई ग्राम पंचायत व धोलिया गांव के बीच रेल ट्रैक के पास एक बाज और एक गिर्द मृत पाये गये। वही जंगली श्वानों के दारा एक चिंकारा हिरण को भी मार डाला।

खेतोलाई से लेकर लाठी के बीच वन्य पक्षियों, जीवों की जान के लगातार जाने के बाद भी वन विभाग की नींद नहीं खुली है। क्षेत्र के पेड़ भी वन माफिया की भेट चढ़ने के बाद भी प्रशासन और संबधित विभागीय अधिकारी कोई ध्यान नही दे रहे हैं।

जानकारी के अनुसार खेतोलाई ग्राम पंचायत के पास गंगाराम की ढाणी के पास रेल ट्रैक के नजदीक शनिवार को एक गिर्द्ध और एक बाज मृत पाये गये। वही दूसरी और एक चिंकारा को जंगली श्वानों ने मार डाला। जिसकी सूचना वन्य जीव प्रेमी राधेश्याम पेमानी ने लाठी वन विभाग को दी। लाठी वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंच कर घटना स्थल का जायज़ा लिया।

गौरतलब है कि घटना से एक दिन पूर्व लाठी गांव में सहायक वन्य जीव अधिकारी ब्रजमोहन गुप्ता ने वन विभाग के कर्मचारियों व अधिकारीयों की बैठक ली। इसके बावजूद भी शनिवार को घटना हो गई।

सत्तर साल बाद मासलपुर के फकीरपुर में पहुंची बिजली

मासलपुर के फकीरपुरा में बसपा नेता लाखन सिंह, अधिक्षण अभियंता ने बिजली पहुंचने पर खुशी जताई।

- डांग क्षेत्र के गांव आज भी अंधेरे में डूबे हुए हैं

मासलपुर, (निसं)। मासलपुर डांग के फकीरपुरा गांव में पहलीवार बिजली पहुंचने पर गांव बासियों में खुशी की लहर दौड़ी। जहां बसपा के नेता लाखन सिंह कटकड व विद्युत निगम के अधीक्षण अभियंता बीएस मीणा ने बल्व जलाकर बिजली का शुभारम्भ किया।

आजादी से लेकर अब तक कई सरकारें चली गई लेकिन डांग क्षेत्र के गांव आज भी अंधेरे में डूबे हुए हैं। मासलपुर डांग क्षेत्र के गांव आज भी अंधेरे में डूबे हुए हैं। मासलपुर डांग क्षेत्र के फकीरपुरा गांव को शनिवार को पहलीवार बिजली देखने को मिली। ग्रामीणों ने बताया कि बसपा नेता लाखन सिंह कटकड़ के प्रयासों के चलते विद्युत निगम के अधीक्षण अभियंता बीएस मीणा ने ग्रामीणों की समस्या को देखते हुए गांव को विद्युतिकरण से जोड़कर पहलीवार बिजली की रोशनी पहुंचाई। जहां शनिवार को बसपा नेता व निगम के अधीक्षण अभियंता ने बल्व जलाकर गांव को रोशन किया। जिस खुशी में ग्रामीणों ने बसपा नेता व एसई का माला साफा पहनाकर स्वागत किया।

अरथूना-माही महोत्सव : आज रोशन होगा एक हजार साल पुराना अरथूना मंदिर

- कोणार्क फेस्टिवल की तर्ज पर होंगी प्रस्तुतियां
- कई राज्यों के कलाकार महोत्सव में अपनी प्रस्तुति देंगे

बांसवाड़ा, (निसं)। अरथूना-माही महोत्सव के तहत पहली बार सात जनवरी को रात्रि में लगभग एक हजार साल पुराने अरथूना के मंदिर रात्रि में रोशन होंगे। इन मंदिरों पर आकर्षक रंगीन रोशनी की जाएगी और इनको बैकग्राउण्ड में रखते हुए कोणार्क फेस्टिवल की तर्ज पर लोक-शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। जिला कलैक्टर भगवती प्रसाद ने बताया कि महोत्सव के तहत आयोजित होने वाले विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला का आगाज अरथूना देवालय वृन्द बाह्य परिसर में देशभर से आए कलाकारों की प्रस्तुतियों के साथ होगा।

कार्यक्रम संयोजिका एवं अभिनव शिक्षा समिति की सचिव मालिनी काले ने बताया कि शाम साढ़े पांच बजे से शुरु होने वाले कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के पश्चात् प्रियांशी व्यास, तनिषा जोशी, सौम्या जैन, सोनाली लड्ढा एवं सिया जैन के दल द्वारा उप शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति दी जाएगी। वहीं मनीषा भट्ट व मनु काले द्वारा सितार वादन, राग रागेश्री व तबला वादन प्रस्तुत किया जाएगा। इसके पश्चात् बड़ौदा (गुजरात) की वासंती जोशी, प्राजक्ता जोशी व कांग्शा आचार्य द्वारा भरतनाट्यम नृत्य तथा शिव स्तुति व तिल्लाना की प्रस्तुति दी जाएगी। इसके अलावा रत्ना घाटे, मेघा, वनिता कंसारा एवं चित्रा काले द्वारा राजस्थानी मांड गायन होगा। वहीं इस दौरान जयपुर के कलाकारों द्वारा संतुर वादन की प्रस्तुति भी दी जाएगी।

मुंबई, दिल्ली, मेरानगढ़ में प्रस्तुति दे चुके वागड़ के लोक कलाकार खेमराज एवं दल द्वारा वागड़ के फागुनी गैर नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा।

अरथूना में आयोजित होने वाली रंगारंग लोक शास्त्रीय निशा की तैयारियों की समीक्षा कार्यक्रम की नोडल अधिकारी व उपखण्ड अधिकारी पूजा पार्थ व तहसीलदार करणसिंह के निर्देशन में एक्सपर्ट्स के दल ने तैयारियां की।

ज़नवाणी

लोभ छोड़ दयावान बन मानव जाति का कल्याण करें

एक तरफ तो देश के सैकड़ों सांसद, मंत्री एवं विधायकगण हैं जिनको हर माह 2 से 3 लाख की सैलेरी मिलती है और उसके अलावा सरकारी गाड़ी व रहने के लिये आवास सुविधा मिल रही है। इसके अलावा भी बीसों प्रकार की नि:शुल्क सुविधायें भी सरकार द्वारा मिल रही है। उसके बावजूद भी उनकी हमेशा यह भावना रहती है कि उनके वेतन-भत्तों में वृद्धि हो, संतोष नाम की कोई चीज नहीं।

दूसरी ओर राज.विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति आर.पी. कोठारी जी हैं जो कि बहुत ही निर्लोभी, संतोषी एवं दयावान व्यक्ति है क्योंकि उनको जो मंथली तनख्वाह मिल रही है, उसको वो हर्षपूर्वक राज्य के निर्धन छात्रों के कल्याणार्थ खर्च करने लग गये हैं। अत: कोठारी साहब बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं। इस वक्त देश एवं देशवासियों को ऐसे ही निर्लोभी व्यक्तियों की जरूरत है क्योंकि ऐसे लोग ही समाज को सुधारने में महत्ती भूमिका निभा सकते हैं।

देश एवं राज्य के सांसदों, मंत्रियों, विधायकों, सरकार के बड़े अधिकारियों, गरीब-मजबूर रोगियों से जमकर बेहिसाब फीस वसूल करने वाले निर्दयी डॉक्टरों एवं प्राइवेट शिक्षण संस्थान चलाकर गरीबों को लूटने वाले धनाढ्य लोगों को कोठारी जी से सीख लेनी चाहिए और उनको लोभ को छोड़ दयावान बनकर मानव जाति का कल्याण करना चाहिये। **–नेमीचन्द छाबड़ा, जयपुर (राज.)**

कार्टूनी नज़रिया

हिन्दू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 7 जनवरी, 2018

माघ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2074, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, सौभाग्य योग, वाणिज करण, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-धनु, गुरू-तुला, शुक्र-धनु, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

आज उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 1:10 तक, सौभाग्य योग प्रात: 8:27 तक है। इसके पश्चात हस्त नक्षत्र, शोभन योग, विष्टि करण आरम्भ होगा। आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा और त्रिपुष्कर योग सायं 4:04 से रात्रि 10:10 तक है। रवियोग रात्रि 1:10 तक बना रहेगा और अमृत सिद्धि योग रात्रि 1:10 से सूर्योदय तक है। भद्रा सायं 4:04 से रात्रि 3:53 तक बनी रहेगी। आज शनि उदय पूर्व सायं 6:00 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:39 से 9:57 तक, लाभ-अमृत 9:57 से 12:33 तक, शुभ 1:51 से 3:09 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष

घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

परिजनों का व्यवहार अच्छा नहीं रहेगा। आपसी वैमनस्यता के कारण आवश्यक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। जीवनसाथी से मतभेद बढ़ सकते हैं।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। घर-परिवार में महत्वूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। धन हानि हो सकती है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कन्या

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला

परिवार में आपसी अनबन-मतभेद बढ़ने का भय है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है और धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक

आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मीन

घर/परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।